1. भारतीय प्राचीन इतिहास

इतिहास 'इति + ह + आस' नामक तीन शब्दों का योग है। इसका अर्थ है कि निश्चित रूप से ऐसा हुआ। इस व्याख्या के अनुसार अतीत के जिन वृत्तान्तों को विश्वास के साथ प्रमाणित कर सकें, उसे इतिहास कहा जाता है।

प्रारंभ से लेकर वर्तमान समय तक मानव सभ्यता के विकास को तीन भागों में बांटा जाता है–

1. **प्रागैतिहास**– वह काल जब लिपि का आविष्कार नहीं हुआ था। इसके अंतर्गत मानव सभ्यता के इतिहास का अधिकतम भाग आ जाता है। इसे पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल एवं नवपाषाण काल में विभाजित किया जाता है।
2. **आध इतिहास**–वह काल जिसमें लिपि का साक्ष्य तो है,लेकिन पढ़ा नहीं जा सका है। जैसे–सिन्धु सभ्यता'।
3. **इतिहास**– वह काल जिसके अध्ययन के लिए लिपि के साक्ष्य उपलब्ध होते हैं तथा इसे पढ़ा जा सका है। जैसे– मौर्य काल, गुप्त काल।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

1. **धर्म ग्रंथ –**

ब्राह्मण धर्म ग्रंथ

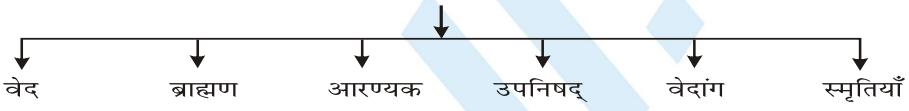

वेद– वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान होता है। कुछ लोग वेदों को अपौरूषेय अर्थात् दैवकृत मानते हैं।

ऐसा माना जाता है कि वेद की रचना तब की गई जब आर्य पंजाब में थे।

ब्राह्मण– यज्ञों एवं कर्मकाण्डों के विधान एवं इनकी क्रियाओं को समझने के लिए इसकी रचना हुई। इसे ब्रंह्म साहित्य के नाम से भी जाना जाता है। प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण होते हैं–

वेद	**ब्राह्मण**
ऋग्वेद	ऐतरेय एवं कौषितकी
यजुर्वेद	शतपथ या वाजसनेय
सामवेद	पंचविश या ताण्ड्य
अथर्ववेद	गोपथ
उपवेद	**संबंधित**
आयुर्वेद (चिकित्सा)	ऋग्वेद
गंधर्ववेद (संगीत)	सामवेद
धनुर्वेद (धनुविद्यि)	यजुर्वेद
शिल्पवेद (शिल्पकला)	अथर्ववेद

आरण्यक – दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन। इनकी कुल संख्या सात है।

उपनिषद् – इसका शाब्दिक अर्थ है– 'समीप बैठना'। अर्थात् ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरु के समीप बैठना। ब्रह्म विषयक होने के कारण इन्हें ब्रह्मविद्या भी कहा जाता है। वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग होने के कारण इन्हें वेदांत भी कहा जाता है। प्रमुख उपनिषद् है– ईश, केन, कठ, माण्डूक आदि।

वेदांग – वेदों के अर्थ को अच्छी तरह समझने के लिए, इनकी संख्या छः है। शिक्षा, व्याकरण, कल्प निरूक्त, छंद, ज्योतिष!

स्मृतियाँ – स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। मनुष्य के पूरे जीवन से सम्बन्धित अनेक क्रियाकलापों के बारे में असंख्य विधि -निषेधों की जानकारी इन स्मृतियों से मिलती है। मनुस्मृति सबसे प्राचीन है।

महाकाव्य

रामायण: रामायण की रचना बाल्मीकि द्वारा पहली एवं दूसरी शताब्दी के दौरान संस्कृत भाषा में की गयी। प्रारंभ में इसमें मात्र 6000 श्लोक थे पर वर्तमान में इसमें करीब 24000 श्लोक हैं। सात काण्डों में विभाजित। भुशुण्डि रामायण को आदि रामायण कहा जाता है।

महाभारत: महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित। प्रारम्भ में मात्र 8,800 श्लोक वाले इस महाकाव्य को जयसंहिता कहा गया। वर्तमान में इसके श्लोकों 1,00,000 हो गई है और अब यह **सत साहस्त्री संहिता** या **महाभारत** कहलाता है। महाभारत का प्रारंभिक उल्लेख आश्वलायन के गृहसूत्र में मिलता है। यह 18 पर्वों में विभाजित है।

पुराण–

- प्राचीन आख्यानों से युक्त ग्रंथ को पुराण कहा जाता है। इनकी संख्या 18 है।
- 5वीं से चौथी शताब्दी ई॰ पू॰ तक पुराण अस्तित्व में आ चुके थे।
- सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक पुराण मत्स्य पुराण है।

बौद्ध साहित्य

महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के उपरान्त आयोजित विभिन्न बौद्ध संगीतियों में संकलित किये गये। त्रिपिटक संभवत: सर्वाधिक प्राचीन धर्मग्रंथ है।

त्रिपिटक तीन हैं–

- **सुत्त पिटक:** बुद्ध के धार्मिक विचारों एवं उपदेशों का संग्रह। यह पांच निकायों में विभाजित है।
- **विनय पिटक** – मठ निवासियों के अनुशासन संबंधी नियम। यह तीन भागों में विभक्त हैं।

अभिधम्म पिटक – बौद्ध मतों की दार्शनिक व्याख्या।

[**नोट** – बौद्ध धर्म की पुस्तक मिलिन्दपन्हो में यूनानी नरेश मीनान्डर (मिलिन्द) एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच वार्त्तालाप का वर्णन है।]

जैन साहित्य

प्राकृत एवं संस्कृत भाषा।

- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है। इस आगम साहित्यों की रचना श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा की गयी थी। आचरंग सूत्र से जैन भिक्षुओं के आचार-विचार का विवरण मिलता है।
- भगवती सूत्र से महावीर स्वामी के जीवन-शिक्षा के विषय में जानकारी मिलती है।
- **लौकिक साहित्य:** ऐतिहासिक एवं समसामयिक साहित्य।
- **अर्थशास्त्र:** कौटिल्य द्वारा रचित। यह मौर्यो की जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक स्त्रोत हैं।

  भारत का पहला राजनीतिक ग्रंथ।

  15 खण्डों में विभाजित। 6000 श्लोक।

मुद्राराक्षस–

विशाखादत्त द्वारा रचित।

मौर्य वंश के संबंध में जानकारी।

अष्टाध्यायी–

पाणिनि द्वारा रचित।

व्याकरण के सबसे प्राचीन ग्रंथ।

2. विदेशी विवरण–

यूनानी लेखक	**चीनी लेखक**	**अरबी लेखक**
नियार्कस	फाह्यान	अलबरूनी
आनेसिकिटस	ह्वेनसांग	सुलेमान
अरिस्टोबुलास	इत्सिंग	अल मसूदी
मेगास्थनीज		

3. अभिलेख–

नाम	**राजा**
हाथी गुम्फा अभिलेख	खारवेल
प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख	हरिषेण।
गौतमी पुत्र शातकर्णी	नासिक अभिलेख
मंदसौर अभिलेख	यशोधर्मन।
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय।

प्रागैतिहास काल

- प्रागैतिहासिक काल वह काल है जिसका कोई लिखित साक्ष्य नहीं है।

प्रागैतिहासिक काल का विभाजन

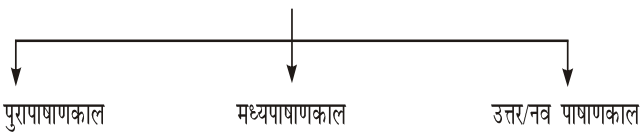

- इस काल के मनुष्य मुख्यत: निग्रोट जाति के थे।

मध्य पाषाण काल

- इस काल से पशुपालन की शुरुआत हुई।
- स्थाई कृषि की अभी भी शुरुआत नहीं हुई थी।
- मानव द्वारा छोटे औजारों का प्रयोग की शुरुआत हुई थी।
- भारत में मानव अस्थिपंजर इसी काल से ही सर्वप्रथम प्राप्त होने लगा था।
- इसी काल से मछली पकड़ने की शुरुआत हुई।

नवपाषाण काल

- स्थायी जीवन व स्थायी कृषि व्यवस्था की शुरुआत हुई।
- स्थायी जीवन की शुरुआत भारतीय महाद्वीपों के उत्तर - पश्चिम क्षेत्र में हुई।
- इस काल में सती प्रथा थी।
- इसी काल में चावल का सर्वप्रथम साक्ष्य कोल्डिहवा (यू. पी) से मिला है।
- चिरांद (बिहार) से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण पाये गये हैं।
- मेहरगढ़ (पाकिस्तान) से कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है।
- बुर्जहोम (कश्मीर) से कुत्ता के साथ मनुष्य को दफनाये जाने का साक्ष्य मिला है।

EduBull.com